आदरणीय शिक्षकगण,

आशा है आप सकुशल होंगे। आपके त्याग और तप से ही एक सुशिक्षित राष्ट्र का निर्माण संभव है।

शिक्षा के अधिकार कानून के लागू होने के बाद शिक्षा-क्षेत्र में कार्य कर रहे सभी जन के दायित्व और भी बढ़ गए हैं। 6-14 आयु वर्ग के बच्चों का यह अधिकार है कि वह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करे और इसे प्रदान करने के सभी उपादानों को संगठित, संतुलित और न्यायपूर्ण तरीके से उन तक पहुँचाना हमारा दायित्व है।

माँ-पिता के बाद बच्चों से सीधा संवाद यदि कोई स्थापित करता है, तो वह हैं आप शिक्षक। शिक्षक ही बच्चों का स्वाभाविक रूप से मार्गदर्शन कर उन्हें उनकी रुचि के अनुसार आगे बढ़ने में प्रेरक का कार्य करते हैं।

बिहार की नयी पाठचर्या एवं पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्यपुस्तकें बच्चों को खुद करके सीखने का अवसर प्रदान करती हैं। आप इस तथ्य से भली-भाँति अवगत होंगे। पाठ्यपुस्तक में संयोजित पाठ के उद्देश्य क्या हैं? उनसे गुजरकर बच्चों में कौन-से कौशल विकसित होंगे ? हम उनका सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कैसे करेंगे? शिक्षकों को इसकी स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए। आपकी शैक्षिक ज़रूरतों, वर्ग-कक्ष में पाठ विनिमयन में आपको सहयोग करने के उद्देश्य से इस शिक्षण सहयोग संदर्शिका का निर्माण शिक्षकों द्वारा शिक्षकों के लिए किया गया है। यह प्रत्येक पाठ में उद्देश्य के साथ-साथ पाठ विनिमयन में की जाने वाली गतिविधियों के संयोजन एवं तद्नुसार सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की रूप-रेखा तैयार करने में आपका सहयोग करेगी, ऐसी आशा है। प्रथम चरण में कक्षा I से V तक की हिन्दी एवं गणित विषय की शिक्षण सहयोग संदर्शिका का विकास यूनिसेफ, बिहार के सहयोग से एस. सी.ई.आर.टी., पटना, बी.ई.पी. एवं बी.ई.क्यू.एम. के संयुक्त प्रयास से किया गया है। शेष संदर्शिकाओं का विकास प्रक्रियाधीन है।

आपसे अनुरोध है कि आप वर्ग विनिमयन और सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में इस संदर्शिका की सहायता लें तथा इस संदर्शिका को और मूल्यवान बनाने हेतु हमें सुझाव दें। आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

धन्यवाद!

(राहुल सिंह)
राज्य परियोजना निदेशक
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

दिशाबोध

राहुल सिंह
राज्य परियोजना निदेशक, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

हसन वारिस
निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., पटना

मधुसूदन पासवान
राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, प्रारंभिक एवं औपचारिक शिक्षा
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

दीपक कुमार सिंह
राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, नवाचारी शिक्षा,
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना-सह-
कार्यक्रम प्रबंधक, बिहार शैक्षणिक गुणवत्ता मिशन, पटना

राजीव सिन्हा
प्रोग्राम मैनेजर, यूनिसेफ, पटना

डॉ. एस.ए.मोईन
विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा
एस.सी.ई.आर.टी., पटना

डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी
प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन
एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर (वैशाली)

अकादमिक संयोजक

डॉ. श्वेता सांडिल्य
शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, पटना

नीरज दास गुरु
संयुक्त कार्यक्रम प्रबंधक,
बिहार शैक्षणिक गुणवत्ता मिशन, पटना

नलिन कुमार मिश्र
संयुक्त कार्यक्रम प्रबंधक,
बिहार शैक्षणिक गुणवत्ता मिशन, पटना

डा0 उदय कुमार उज्जवल
अपर राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

भारत भूषण
विशेषज्ञ, शिक्षक-प्रशिक्षण
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

डा0 नरेश कुमार सिंह
विशेषज्ञ, अनुश्रवण एवं अकादमिक अनुसमर्थन
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

लेखन-सहयोग

जितेन्द्र कुमार, सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, महमदा, परैया, गया, **कृत प्रसाद,** सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, चंडासी, नूरसराय, नालंदा, **अरशद रज़ा,** सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, पचासा, रहुई, नालंदा, **अरविन्द कुमार,** साधनसेवी, प्रखंड-संसाधन केन्द्र, नगर निगम, गया, **विकास कुमार,** सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, बसकुटिया, चकाई, जमुई, **मनोज त्रिपाठी,** सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, फरना, बड़हरा, भोजपुर

समीक्षा एवं संशोधन-परिमार्जन

बिरेन्द्र सिंह रावत, शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, **संजय शर्मा,** शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, **डॉ. राकेश सिंह,** शिक्षा निदेशालय, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली, **चन्दन श्रीवास्तव,** शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, **कृष्णकांत ठाकुर,** पूर्व राज्य साधनसेवी, बी.ई.पी., पटना, **सुमन कुमार सिंह,** मध्य विद्यालय, कौड़िया बसंत, भगवानपुर हाट, सीवान, **मनीष रंजन,** प्राथमिक विद्यालय, मित्तनचक मुसहरी, सम्पतचक, पटना

शिक्षकों के लिए संदेश

पाठचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ-योजनाओं पर चर्चाएँ होती रही हैं। पाठचर्या एवं पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए पाठ-योजना की जरूरत पर भी बल दिया जाता रहा है। किसी भी कार्य को करने के लिए योजना की जरूरत होती है। प्रत्येक पाठ का एक उद्देश्य होता है। हर पाठ में बच्चों के लिए कुछ दक्षता निहित होती है। शिक्षक को उद्देश्य ज्ञात होना चाहिए क्योंकि लक्ष्य का पता हो तो रास्ता ढूँढ़ना आसान होता है।

बिहार पाठचर्या की रूप-रेखा-2008 के अनुसार, ''बच्चे अनुभव के जरिए, कुछ बनाते और करते हुए, प्रयोग करते, पढ़ते, बहस करते, पूछते, सुनते, सोचते और जवाब देते हुए तथा खुद को वाणी, गतिविधि तथा लेखन के जरिए अभिव्यक्त करते हुए सीखते हैं।'' अतः सिखाने के लिए आवश्यक है कि उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखा जाय। यह शिक्षण-संदर्शिका शिक्षकों के मार्गदर्शन हेतु है। इसमें प्रत्येक पाठ का उद्देश्य एवं बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को ध्यान में रखकर किए जाने वाले क्रिया-कलापों की चर्चा की गयी है।

परंपरागत पढ़ाई में शिक्षक पूरे वर्ग से एक साथ बातचीत करते हैं जबकि बच्चे अलग-अलग दक्षता स्तर के होते हैं। ऐसे में कुछ बच्चे सीखते हैं, कुछ कम सीखते हैं, कुछ बहुत कम सीखते हैं। किसी विषय-वस्तु को पढ़ाने से पहले उसका संदर्भ बनाना या उसकी भूमिका बनाना इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होती है कि यह बच्चों को वह संदर्भ उपलब्ध कराता है जिससे वे नये सिखाये या पढ़ाये जा रहे ज्ञान को अपने ज्ञान के मौजूदा स्तर से जोड़ते हुए आगे नया सीख पाएँ। बशर्ते यह काम ठीक से व बच्चों के स्तर को ध्यान में रखकर किया जाय। शिक्षकों को कुछ हद तक बच्चों को पाठ से जोड़ने वाली एक सार्थक बातचीत करना जरूरी है। कक्षा में पाठ की भूमिका बनाते हुए बोले गये वाक्य बच्चों के वश में न रहने वाले मन को विषय से जोड़ता है। परन्तु, हमारा उद्देश्य यहाँ पूरा नहीं होता, यहाँ समूह-कार्य की आवश्यकता महसूस होती है।

समूह में बच्चे अपने दोस्तों से सीखते हैं। एक दूसरे से ज्यादा खुलते हैं। हम बच्चों को आपस में बातचीत कर सीखने का मौका नहीं देते। शिक्षक का ऐसा मान लेना कि वही सिखाने वाले हैं, गलत है। वास्तव में प्रत्येक बच्चा किसी शिक्षक के वनिस्पत हम उम्र साथियों से ज्यादा सीखता है। साथियों के साथ प्रश्न पूछने की आजादी तथा सरलता से तथा दोस्ताना माहौल में सीखने का मौका मिलता है। सहभागिता की भावना का विकास होता है। बच्चे वर्ग में शिक्षक द्वारा बतायी गयी बातों को जब समूह में एक दूसरे की सहायता से करते हैं तो समझ सुदृढ़ होती है।

सीखी हुई बातों का उपयोग जीवन में कर पाना ही सीखने की उपयोगिता है। बच्चे जब खुद करके सीखेंगे तो उनका आत्मबल बढ़ेगा, अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ेगी और तभी सीखी हुई बातों का उपयोग जीवन में कर सकेंगे। अतः सिखाने की प्रक्रिया में व्यक्तिगत कार्य आवश्यक हो जाता है। व्यक्तिगत रूप से काम करने से बच्चा अपने अनुभवों को व्यवस्थित कर सकता है। शिक्षकों को चाहिए कि बच्चों को प्रश्न करने का ज्यादा मौका दें। स्वाध्याय करने तथा मूल्यांकन दोनों ही कामों के लिए व्यक्तिगत कार्य किया जा सकता है। व्यक्तिगत कार्य की सफलता तभी है जब प्रत्येक बच्चे के द्वारा किये गये काम को जाँचा जा सके। यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि बच्चों को दिये जाने वाले कार्य चुनौतीपूर्ण हों। यह चुनौती न बहुत आसान हो, और न बहुत कठिन। चुनौतियाँ बच्चों के उत्साह को बनाये रखती हैं तथा उत्साह सीखने की प्रक्रिया को तीव्र करता है।

प्रत्येक शिक्षक को यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रत्येक बच्चा वर्ग-कक्ष में दिये गये अभ्यासों को तथा पाठ्य-पुस्तक के अंत में दिये गये लिखित एवं मौखिक अभ्यासों को करे तथा उन अभ्यासों की जाँच पूरे धैर्य के साथ की जाए ताकि बच्चों को

अगर कोई कठिनाई हो तो वह कठिनाई दूर की जा सके। बच्चे पूर्ण रूप से सीखें हैं या नहीं इसके लिए शिक्षक पाठ की पुनरावृत्ति करें । बच्चों से पाठ संबंधित बातें करें, पूछें एवं यह जानने की कोशिश ही नहीं करें वल्कि अवश्य जानें कि सभी बच्चे सीख गए हैं। नहीं सीख पाये बच्चों की पहचान करें एवं उनका पुनर्बलन करें।

बिहार की स्कूली शिक्षा हेतु एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित नयी पाठ्यपुस्तकें कुछ नया सोचने और करने को तथा खोजने को उत्प्रेरित करती हैं। अतः पाठों के अंत में दिए गये सभी अभ्यास प्रश्नों के उत्तर सिर्फ उस पाठ से नहीं खोजे जा सकते वल्कि इन्हें खोजने व उत्तर पाने के लिए कई बार पाठ्यपुस्तक और स्कूल की परिधि से बाहर जाना होगा। पुरानी एवं नयी पाठ्यपुस्तकों में यह एक बड़ा फर्क है। ऐसे में शिक्षक-शिक्षिकाओं को नये नज़रिये के साथ इन पाठ्यपुस्तकों को पढ़ना-पढ़ाना चाहिए।

शिक्षक प्रस्तावित क्रिया-कलाप में प्रत्येक गतिविधि समूह से, पाठ पर अपनी समझदारी के अनुसार, जोड़-घटा सकते हैं। आपने पंचतंत्र का नाम अवश्य सुना होगा। एक राजा को चिंता थी कि उसके राजकुमार पढ़ते नहीं हैं। कई गुरु बुलाये गये परन्तु वे सारे के सारे चंचल राजकुमार के सामने असफल साबित हुए। बाद में पंडित विष्णुशर्मा को बुलाया गया। उन्होंने राजकुमार को पोथियों से नहीं, बल्कि कहानियों से शिक्षा देनी शुरू की। उनके किस्सों में नीरसता नहीं थी और प्रत्येक कहानी के पीछे एक संदेश छिपा होता था। कल तक के उदंड राजकुमार अब इनमें रस लेने लगे और उस योग्यता को हासिल कर सके, जिसकी उनसे उम्मीद थी। इन्हीं कहानियों का संग्रह 'पंचतंत्र' कहलाता है। आज भी ये कहानियाँ बच्चे सुनते हैं और उनसे बहुत कुछ सीखते हैं। ऐसा कहने का तात्पर्य है कि यह स्थापित हो गया है कि हमारी बुद्धि, हमारे अनुभव एवं सूझ-बूझ के इस्तेमाल करने का प्रतिफल है। कोई भी नई बात हम अपनी पूर्व जानकारी के बाद सीखते हैं। किसी भी वर्ग-कक्ष में बच्चों के सामान्य अनुभव पर आधारित बातचीत के आधार पर ही नयी जानकारी दें तथा ज्ञान के सृजन हेतु माहौल बनायें। बच्चों की सामान्य बुद्धि/अनुभव पर आधारित क्रिया-कलाप, बच्चों के बुद्धि के विकास में सहायक होंगे। हमारा उद्देश्य बच्चों की पढ़ने में अभिरुचि पैदा कराना होना चाहिए। इसलिए शिक्षक अपने बुद्धि-विवेक से इस शिक्षण सहयोग संदर्शिका में सुधार कर सकते हैं।

अतः शिक्षक प्रस्तावित क्रिया-कलाप में से गतिविधि आधारित बच्चों के निर्णय लेने की क्षमता का सम्मान करते हुए पाठ पर अपनी समझदारी के अनुसार जोड़-घटा सकते हैं। प्रत्येक गतिविधि के बाद अपना एवं बच्चों का मूल्याँकन जरूर करें। इसके आधार पर हर पाठ के बाद दी गई तालिका को भरना होगा। यह संदर्शिका केवल एक मार्गदर्शन है। अतः शिक्षकों के विचार सादर आमंत्रित हैं। राज्य के सभी प्रारंभिक विद्यालयों में विद्यार्थी प्रगति-पत्रक का संधारण सुनिश्चित करने का निर्णय शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा लिया गया है। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए कक्षावार-विषयवार पूरे वर्ष में प्रत्येक चार माह पर इस प्रगति-पत्रक को भरना अनिवार्य है। यह प्रगति-पत्रक प्रत्येक बच्चे की शैक्षिक और सह-शैक्षिक उपलब्धियों का दर्पण होगा। अतः इस संदर्शिका में संबद्ध अंश भी दिया जा रहा है। अपेक्षा है कि मूल्यांकन की योजना बनाते समय आप इस प्रगति-पत्रक को अवश्य ध्यान में रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित

अकादमिक संयोजक दल

कक्षा I में शिक्षक द्वारा नित्य किये जाने वाले कार्य

बातचीत कैसे करें ?

1 रोज सुबह चेतना–सत्र के बाद बच्चों को कक्षा में ले जाकर शिक्षक एक गीत सिखाएँगे। कक्षा की रुटीन कुछ इस प्रकार हो सकती है :– 10 मिनट का गाना सीखना/सुनना, 30 मिनट की बातचीत, 30 मिनट की चित्रकारी, 60 मिनट की कहानी सुनाना/पढ़ना, 60 मिनट का खेल जिसमें शिक्षक 30 मिनट बच्चों को खेलाएँ और 30 मिनट बच्चों को खुद खेलने के लिए छोड़ दें। 60 मिनट की गणित एवं 60 मिनट का भाषा शिक्षण।

2 बातचीत कैसे करें?– कक्षा में शिक्षक बातचीत करें। हर रोज 5–6 छोटे–छोटे वाक्य लिखें, उदाहरण –

- आज सोमवार है।
- कक्षा में पाँच बच्चे नहीं आये हैं।
- मैं पहली कक्षा में पढ़ता हूँ। अभी दिन है, इत्यादि।

3 हर महीना एक नया गीत बच्चों को सिखाएँ ।

4 हर पाठ के नये शब्दों का फ्लैश–कार्ड बनाकर कक्षा में प्रदर्शित करें। बच्चों से रोज पढ़वाएँ। प्रयास रहे हर बच्चे को पढ़ने का मौका मिले। (चार्ट पेपर के चौकोर या गोल टुकड़ों को काटकर शब्द या अक्षर लिखकर फ्लैश कार्ड बनाएँ)।

5 पूरे सप्ताह रोज एक कहानी सुनाएँ। कहानी को बड़े पेपर पर लिखकर कक्षा में टाँगें और बच्चों से पढ़वाएँ।

6 बारहखड़ी और अक्षर चार्ट से अक्षरों को काट कर चार्ट पेपर पर चिपकाकर अक्षर–कार्ड बनाएँ।

7 बच्चों से सत्र के शुरू के तीन महीने ढेर सारी चित्रकारी कराएँ जिससे बच्चे को लिखने में सुविधा हो। चित्रकारी, खड़ी, पड़ी, वक्र, तिरछी रेखा से बनी हो– **कुछ चित्र अंतिम पेज पर दिये हुए हैं।**

8 नये पाठ पढ़ाने से पहले पिछले सभी सीखे गए अक्षर, मात्रा और शब्द की पुनरावृत्ति कराएँ।

9 बच्चों को अपनी बात पूरे वाक्य में बोलने के लिए प्रोत्साहित करें।

10 बच्चों के साथ कार्य करने के लिए हर शिक्षक के पास ढेर सारा सादा कागज, रंग, कलम, चार्ट–पेपर, रस्सी, रंगभरनी (crayons), गोंद, अखबार, स्टेपलर इत्यादि होना ज़रूरी है।

11 स्थानीय भाषा में प्रयोग होनेवाले शब्द, उनके अनुरूप हिन्दी–मानक शब्दों का फ्लैश–कार्ड बनाकर बच्चों को एक ही अर्थ होने का बोध समझाएँ, जैसे– गोड़–पैर, घाम–धूप, गाछ–पेड़, रौदा–धूप इत्यादि।

12 कक्षा में रस्सी लगी होनी चाहिए जिसपर बच्चों के कार्य प्रदर्शित होंगे।

13 कक्षा में वर्णमाला, अंक–चार्ट और बारहखड़ी चार्ट टँगा होना चाहिए।

14 शिक्षक इस बात का ध्यान रखें कि हर पाठ में दिये हुए उद्देश्य जब तक हासिल न हो जायें बच्चों से बार–बार अभ्यास करायें।

15 बच्चों को कहानी पहले याददाश्त से सुनाएँ, इसके बाद पुस्तक से पढ़ कर सुनाएँ।

अनुक्रमणिका

कक्षा – I हिन्दी की पाठ्यपुस्तक : अंकुर, भाग – एक

पाठ–संख्या	पाठ का नाम	पृष्ठ–संख्या
पाठ – 1	हमारा गाँव	1
पाठ – 2	हमारा शहर	3
पाठ – 3	प्रार्थना	5
पाठ – 4	आओ खेलें खेल	6
पाठ – 5	चंदा मामा	7
पाठ – 6	धम्मक–धम्मक	9
पाठ – 7	पतंग	11
पाठ – 8	मन करता है	14
पाठ – 9	आलू का पराठा	16
पाठ – 10	पटना का चिड़ियाघर	18
पाठ – 11	चालाक चीकू	20
पाठ – 12	हरे पेड़	22
पाठ – 13	लालची कुत्ता	24
पाठ – 14	दो दोस्त	26
पाठ – 15	शेर और सियार	28
पाठ – 16	स्वर एवं व्यंजन	30

पाठ - 1 हमारा गाँव

उद्देश्य

- बच्चों को बोलने के अधिकाधिक अवसर प्रदान करना ।
- दूसरों की बात सुनने की क्षमता विकसित करना ।
- चित्र से जुड़े बच्चों के पूर्व अनुभवों के आधार पर बातचीत करना।

शिक्षण निर्देश

- शिक्षक पाठ्यपुस्तक में दिए गए चित्र के संबंध में बातचीत करें। पूछें कि इन वस्तुओं को उन्होने कहाँ– कहाँ देखा है, उनसे क्या होता है, चित्र में क्या–क्या दिखाई दे रहा है, इत्यादि । **सभी बच्चों को बोलने के लिए प्रेरित करें।**
- बच्चों के अनुभवों को धैर्यपूर्वक सुनें।
- बच्चों के परिवेश से जुड़े छोटे–छोटे प्रश्नों, जैसे–उनका घर कहाँ है, उनके घर के पास कौन–कौन रहते हैं, वे क्या–क्या करते है, उन्होने किन–किन पालतू जानवरों को देखा है, क्या उनके घर में भी कोई जानवर है, वह कैसे रहता है, क्या खाता है इत्यादि के आधार पर बातचीत करें।

  जैसे – हमारे गाँव का नाम काशीपुर है।
  हमारे गाँव में एक तालाब (पोखर) है।
  गाँव के बीच में एक महल है।
  गाँव में बहुत सारे पेड़ हैं।
  कमला का घर विद्यालय के करीब है।
  रहीम का घर विद्यालय से बहुत दूर है।

- गाँव से जुड़ी तुकान्त पंक्तियाँ बच्चों को सिखाएँ। इसे चार्ट–पेपर पर लिखकर कक्षा में प्रदर्शित करें।

  खेतों से आता है धान, बाग–बगीचों से आता आम।
  पेड़ों की जहाँ हो छाँव, वह है अपना प्यारा गाँव।

- बच्चो के परिचित शब्दों के चित्र एवं फ्लैश कार्ड बनाकर कक्षा में टाँगें। शिक्षक इन शब्दों को बोल–बोल कर पढ़ें। बच्चो को भी अनुमान लगाने के लिए प्रेरित करें।

समूह–कार्य

- बच्चों के चार समूह बनाएँ। उन्हें विद्यालय से बाहर/छत पर ले जाकर चारो दिशाओं में देखने को कहें। कुछ देर बाद बारी–बारी से समूह में पूछें–उन्होंने क्या देखा ? शर्मीले बच्चों को बोलने का अवसर दें। शिक्षक बच्चों द्वारा बतायी गयी वस्तुओं के नाम श्यामपट पर लिखें और चित्र बनाएँ।
- समूह में सभी बच्चो को अपनी इच्छा से अपने समूह की पसंद का चित्र बनाने के लिए कहें तथा कक्षा में प्रदर्शित करें।
- समूह में गीत गायें।
- समूह में चित्र बनायें।

व्यक्तिगत–कार्य

- बच्चों से बारी–बारी से पाठ के चित्रों के बारे में पूछें / बनवायें।
- पाठ से जुड़ी वस्तुओं के चित्र बनवाएँ, जैसे – पेड़, घर, गाय, विद्यालय इत्यादि। हर बच्चे से एक कागज पर एक शब्द लिखवाएँ और कक्षा में लगाएँ। रोज़ सुबह में बच्चों को उसे दुहराने को कहें और चित्र बनवाएँ।
- कक्षा में दीवार पर नीचे बने हुए श्यामपट (आनन्ददायी श्यामपट) पर बच्चों को आसपास दिखनेवाली वस्तुओं के चित्र बनाने का मौका दें।
- विभिन्न रंगों की वस्तुएँ जैसे– सूरज, तारा, पेड़ इत्यादि बनवाएँ और रंग भरवाएँ। पाठ के अंत में कुछ चित्र दिये गये हैं।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से, आसपास पायी जानेवाली वस्तुओं के नाम तथा उनके बारे में पूछें। कोशिश करें कि सभी बच्चे जवाब दें।
- शिक्षक श्यामपट पर चित्र बनाएँ, जैसे – पेड़, घर, आम, गेंद इत्यादि। बच्चों से उन चित्रों के नाम पूछें।
- अन्य चित्र दिखाकर उसपर बात करें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा			
बच्चों की संख्या, जो अपने विचार और अनुभव बता सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो चित्र बनाने में रुचि रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सरल अनुदेशों को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपनी बात पूरे वाक्य में बोल सकते हैं।

पाठ - 2 हमारा शहर

उद्देश्य

- बच्चों के मित्रों से जुड़े अनुभवों पर आधारित बातचीत करना।
- बेझिझक अपनी बात कहने की क्षमता विकसित करना।
- बोलने का अधिकाधिक अवसर प्रदान करना।
- चित्रों को देखकर अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करना।
- सुनने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- शिक्षक पाठ्यपुस्तक में दिये गये चित्र के संबंध में बातचीत करें।
- बच्चों से पूछें– शहर कैसा होता है? वहाँ उन्होंने क्या–क्या देखा?
- शिक्षक बच्चों द्वारा बताये गये शब्दों को श्यामपट पर लिखें।
- शिक्षक चित्र में दिख रही वस्तुओं के सम्बन्ध में अंदाज़ लगाने को कहें। यदि ग्रामीण क्षेत्र है, तो शहर के बारे में अंदाज़ लगाने को कहें।
- अंदाज़ के आधार पर शहर तथा गाँव के बीच अंतर करने का मौका दें। सभी बच्चों से बातचीत करने की कोशिश करें, जो खुद बोलना नहीं चाहते हैं, उनको मौका दें। बच्चों द्वारा कहे गए बातों को श्यामपट पर लिखें और पढ़ें।

समूह–कार्य

- छोटे–छोटे समूहों में बच्चों को बैठायें और प्रत्येक समूह को पाठ के आलोक में चित्र बनाने को दें। बच्चों द्वारा बनाये गये चित्र को कक्षा में प्रदर्शित करें और फिर उसे बच्चों की फाईल में रखें।
- निम्न तुकान्त पंक्तियों का समूह में गायन करायें:–

  ऊँचे–ऊँचे मकान, ट्रेन, मोटर और दुकान।

  बिजली पूरी रात, शहर की है सौगात।

- प्रत्येक समूह को गीत/गाना गाने हेतु प्रेरित करें।
- बच्चों को बड़े समूह में बैठाकर खेल खेलाएँ, जैसे–रूमाल चोर, लूडो, साँप–सीढ़ी इत्यादि।
- कक्षा में ज़मीन पर बड़ा–सा गोला बनाएँ और बच्चों को उस पर एक पंक्ति में चलवाएँ। कभी सीधी, कभी उलटी दिशा में, कभी एड़ी पर, तो कभी पंजों पर। ट्रेन बन कर गोल–गोल घूम सकते हैं।
- बच्चों से तरह–तरह की क्रियाएँ कराएँ, जैसे – धीरे चलना, तेज चलना, दौड़ना, कूदना, नाचना, गोल घूमना, इत्यादि।
- बच्चों से अपने आस–पास दिखनेवाली वस्तुओं के रंग पूछें तथा रंगो के नाम श्यामपट पर लिखें।
- रंगो के नाम बोलें तथा उस रंग से संबंधित वस्तुओं के नाम समूह को बताने के लिए कहें।

व्यक्तिगत–कार्य

- बच्चों से खड़ी एवं पड़ी रेखा बनवायें।
- बच्चों से किताब में दिये गये शहर का चित्र देखकर उसमें से कोई भी वस्तु बनाने की कोशिश करने को कहें।
- बच्चों से पूछें कि गाँव और शहर में मकान किस चीज़ से बनते हैं? शिक्षक उन चीज़ों के नाम श्यामपट पर लिखें।

शहर के मकान	गाँव के मकान
ईंट	ईंट
सीमेंट	मिट्टी

पुनरावृत्ति

- शिक्षक श्यामपट पर एक शहरी मकान का चित्र बनाएँ। बच्चों से पूछें यह भवन किस–किस काम आ सकता है? जो भी जवाब आए, उसका कारण पूछें।
- इसी प्रकार अन्य चित्र दिखाकर उसके संबंध में बातचीत करें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो अपने विचार और अनुभव बता सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो चित्र बनाने में रुचि रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सरल अनुदेशों को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपनी बात पूरे वाक्य में बोल सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो रंग को पहचान सकते हैं।

पाठ - 3 प्रार्थना

उद्देश्य

- कविता को लय के साथ पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- बेझिझक अपनी बात कहने की क्षमता विकसित करना।
- अपनी बात पूरे वाक्य में बोलने की क्षमता विकसित करना।
- सरल निर्देशों को समझने की क्षमता विकसित करना।
- रंगों की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- प्रार्थना को लय में पढ़कर सुनाएँ। इसके बाद प्रार्थना की एक–एक पंक्ति पढ़ें तथा बच्चों को दुहराने के लिए कहें।
- बार–बार अभ्यास के बाद बच्चों से पूरी कविता लय के साथ गवायें।
- पाठ में दिये गये चित्रों के संबंध में बातचीत करें। इन चित्रों को अलग–अलग कागज में बनवाकर उस चित्र का नाम लिखकर कक्षा में प्रदर्शित करायें। चित्रों के नाम लिखने में बच्चों की मदद करें या स्वयं लिख दें।

समूह–कार्य

- विद्यालय में की जानेवाली प्रार्थना का समूह गान कराएँ।
- राज्य प्रार्थना की दो–दो पंक्तियाँ गाकर बच्चों को सिखाएँ।
- बच्चों से कोई स्थानीय प्रार्थना या गीत सुनाने के लिए कहें।
- बच्चों को अपनी कल्पना से विभिन्न रंगोंवाली वस्तुओं का चित्र बनाने के लिए कहें तथा उनमें रंग भरने के लिए प्रेरित करें।

व्यक्तिगत–कार्य

- खड़ी, पड़ी एवं वक्र रेखा बनाएँ। खड़ी रेखा और पड़ी रेखा से सीढ़ी और रेल की पटरी बनाएँ, वक्र रेखा से गेंद या लड्डू बनाएँ।
- बच्चों को अपनी कल्पना से कोई भी चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित करें।

पुनरावृत्ति

- कविता की एक–एक पंक्ति लय में पढ़ें तथा बच्चों को पीछे–पीछे लय के साथ दुहराने को कहें।
- पूरी कविता बच्चों के साथ पढ़ें।
- बच्चों के द्वारा बनाये गये चित्रों की प्रदर्शनी लगाएँ।
- विभिन्न रंगों की वस्तुएँ दिखाकर रंगों के बारे में पूछें।
- बच्चों को तरह–तरह के खेल खेलायें। खेल का चयन बच्चे खुद भी करें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा					
बच्चों की संख्या, जो अपने विचार और अनुभव बता सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो चित्र बनाने में रुचि रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सरल अनुदेशों की समझ रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपनी बात पूरे वाक्य में बता सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो लय में कविता दुहरा सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो रंगों को पहचान सकते हैं।

पाठ - 4 आओ खेलें खेल

उद्देश्य

- बेझिझक अपने अनुभव या विचार व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।
- दूसरों की बात धैर्यपूर्वक सुनने की क्षमता विकसित करना।
- अनुमान लगाने तथा तुलना करने की क्षमता का विकास करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से पूछें– वे कौन–कौन से खेल खेलते हैं ?
- पाठ के चित्रों के आधार पर खेले जा रहे खेलों के बारे में एक–एक कर बात करें। पूछें कि ये खेल कैसे खेले जाते हैं ? बातचीत को शिक्षक छोटे वाक्य में श्यामपट पर लिखें और पढ़कर सुनाएँ।
- बच्चों से पूछें– गोली, क्रिकेट, कितकित, गुल्ली–डंडा इत्यादि खेल कैसे खेलते हैं ?
- शिक्षक खेल, नाव, पहाड़, पेड़, घर, लड़का, लड़की, गुल्ली, डंडा, लुकाछुपी, गेंद, बल्ला इत्यादि शब्दों का फ्लैश–कार्ड बनाएँ और कक्षा में टाँगें। इन शब्दों को पढ़ें और दोहराएँ।

समूह–कार्य

- बच्चों को उनकी पसंद का खेल अलग–अलग समूह में खेलने का मौका दें। उनके खेल में शिक्षक भी शामिल हो जाएँ।
- समूह में बच्चों से खेल करवायें, जैसे आगे दौड़ना, पीछे दौड़ना, दोनों पैरों को एक साथ रख कर कूदना, खींची हुई रेखा पर कूदना, इत्यादि।
- गेंद से विभिन्न तरह के खेल खेलायें, जैसे–लुढ़काना, फेंकना, पकड़ना इत्यादि। ध्यान रखें कि गेंद बड़ी हो और रबर की हो ताकि बच्चों को चोट न लगे।
- बच्चों को कक्षा के अन्दर वाले खेल खेलायें, जैसे – लूडो, कैरम, साँप–सीढ़ी इत्यादि। कक्षा के बाहर वाले खेल, जैसे – रस्सी खींचना, कितकित, लुकाछिपी इत्यादि खेलने का भी मौका दें।
- चित्र में दिये गये खेल का नाम बताने को कहें, उसे श्यामपट पर लिखें और उसके नियम भी पूछें।

व्यक्तिगत–कार्य

- बच्चों को अपनी रुचि के खेलों के बारे में बताने के लिए कहें।
- बच्चों से विभिन्न तरह की रेखाएँ, जैसे– खड़ी, पड़ी, तिरछी, वक्र रेखा बार–बार बनवाएँ।
- पाठ में बनाने के लिए दिये गये रेखाचित्रों को बनवाएँ।
- ज़मीन या आनन्ददायी श्यामपट पर खल्ली से बच्चों से चित्र बनवाएँ, जैसे – सूरज, चाँद, बादल, पेड़, घर, चिड़िया, पतंग, किताब, गेंद, पहाड़ इत्यादि।

पुनरावृत्ति

- श्यामपट पर खेलों से संबंधित चित्र बनाएँ तथा उनके बारे में बात करें।
- नये शब्दों के फ्लैश–कार्ड को पढ़ें और बच्चों से उन्हें दुहराने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा			
बच्चों की संख्या, जो अपने विचार और अनुभव बता सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो चित्र बनाने में रुचि रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सरल अनुदेशों को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपनी बात पूरे वाक्य में कह सकते हैं।

पाठ - 5 चंदा मामा

उद्देश्य

- कविता को लय के साथ गाने की क्षमता विकसित करना।
- बच्चों को बोलने का अधिकाधिक अवसर प्रदान करना।
- वर्णमाला के कुछ खास अक्षरों (च, क, ल, द, थ एवं म) की पहचान करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से चाँद का चित्र श्यामपट, ज़मीन, काग़ज़ या स्लेट पर बनवायें।
- कविता को मानक उच्चारण, हाव–भाव एवं लय के साथ पढ़कर सुनायें। बाद में शिक्षक बच्चों को भी लय एवं हाव–भाव के साथ पीछे–पीछे दुहराने के लिए कहें।
- नये शब्दों का फ्लैश–कार्ड बनाकर कक्षा में प्रदर्शित करें और बच्चों से पढ़वायें।
- अगर बच्चों को याद हो, तो शिक्षक बच्चों से स्थानीय लोकगीत या लोरी सुनें। अगर बच्चो को नहीं मालूम हो तो गाँव के किसी व्यक्ति से कुछ लोकगीत या लोरी कक्षा में सुनवाएँ और सिखाएँ।
- शब्दों के कार्ड बनाएँ और कक्षा में प्रदर्शित करें तथा बच्चों से पढ़वाएँ, जैसे– कलम, लाल, मटर, चमक, चंदा, थन, इत्यादि। इनमें प्रयुक्त अक्षरों के भी कार्ड बनाकर प्रदर्शित करें।

समूह–कार्य

- वर्णमाला का चार्ट लटका दें। श्यामपट पर मामा, चंदा, कलम तथा थाली शब्द लिख दें। वर्णमाला देखकर बच्चों को अक्षरों को अलग–अलग करने के लिए कहें (ये अक्षर होंगे क, ल, म, च, द, थ) **बच्चों को खुद खोजनें दें और ज़रूरत हो तो उनकी मदद करें)** सभी बच्चों को इन अक्षरों को ज़ोर से पढ़ने को कहें।
- हर अक्षर का उच्चारण करके बताएँ। फिर बच्चों के समूह बनाकर प्रत्येक अक्षर से बनने वाले शब्दों से संबंधित चित्र बनाने को कहें। उदाहरण के लिए क से कमल, कबूतर, कलछुल, कान, ककड़ी इत्यादि। बच्चे जैसा भी चित्र बनायें, उसे सुधारें नहीं, बल्कि इसे उन्हें शब्दों के साथ जोड़ना सिखाएँ। इसके अतिरिक्त उन वस्तुओं के भी चित्र बनवायें, जिनके बीच या आखिर में 'क' का उपयोग होता है।
- समूह में इन अक्षरों को मुखर स्वर में ज़ोर–ज़ोर से बोलकर पढ़वाएँ।
- अभ्यास के प्रश्नों को समूह में मिलजुल कर हल करने के लिए कहें।
- वर्णमाला के अक्षर के फ्लैश–कार्ड बनाएँ। इन फ्लैश कार्डों की सहायता से सीखे गये वर्ण से बिना मात्रा वाले शब्द बनवाएँ, जैसे– क + ल = कल, च + म = चम, क + म = कम।
- वर्णमाला के दो सेट फ्लैश–कार्ड बच्चों को समूह में दें और एकसमान अक्षरों को मिलाने के लिए कहें।

व्यक्तिगत–कार्य

- सभी बच्चे (क, ल, म, च, द, थ) छह अक्षरों को श्यामपट या ज़मीन पर लिखें।
- हर एक बच्चे को अक्षर–कार्ड उपलब्ध कराएँ और उससे अक्षर को देखकर लिखने को कहें और उनसे जुड़े चित्र भी बनवायें।
- अक्षरों को बारी–बारी से पाठ में खोजने को कहें तथा उन अक्षरों पर गोला लगवाएँ। शिक्षक बच्चों के काम को देखें

तथा उनकी मदद करें।

- अक्षरों को चित्रात्मक तरीके से लिखवाएँ, जैसे – क लिखना हो तो पहले बनाओ एक आधी गोला रेखा यानी C, उसके बगल में डालो एक डंडा यानी , उसके बगल में लगाओ एक पूँछ यानी , उसके ऊपर एक पड़ी रेखा यानी क, इस प्रकार बन गया 'क'। इसी प्रकार अन्य अक्षर भी लिखवायें। क

- पाठ का अभ्यास करवायें।

पुनरावृत्ति

- शिक्षक बारीबारी से एक–एक शब्द लिखकर उसमें आये अक्षरों का उच्चारण करवाएँ तथा उन अक्षरों की सहायता से बननेवाली एक वस्तुओं के नाम बताने को कहें। बच्चों द्वारा बताये गये शब्द को श्यामपट पर लिखें।
- बच्चों द्वारा चित्र बनवाएँ तथा उसकी प्रदर्शनी लगवाएँ।
- बच्चों द्वारा **चंदा मामा** कविता गाकर सुनाने कहें।
- बच्चों से कविता के संबंध में बातचीत करें।
- बच्चों से लोरी सुनें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा								
बच्चों की संख्या, जो लय में कविता दुहरा सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो चंदामामा के बारे में अपने विचार और अनुभव बता सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो चित्र बनाने में रुचि रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अक्षर पहचान सकते हैं।					
			क	ल	म	च	द	थ

पाठ - 6 धम्मक-धम्मक

उद्देश्य

- कविता गाने की क्षमता विकसित करना।
- वर्णमाला के अक्षरों ग, घ, त, थ, ह एवं छ, ज की पहचान करने की क्षमता विकसित करना।
- बच्चों में विचार और अनुभव बेझिझक व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- पाठ्यपुस्तक में दी गयी कविता को हाव–भाव एवं लय के साथ पढ़ कर सुनाएँ। बच्चों को भी इस कविता को लय एवं हाव–भाव के साथ पीछे–पीछे दुहराने को कहें।
- पाठ में आए परिचित शब्दों को श्यामपट पर लिखें। उनसे शब्दों को मौखिक बताने के लिए कहें। श्यामपट पर लिखे, शब्दो को स्वयं पढ़ें तथा बच्चों से भी पढ़वाने का प्रयास करवायें। प्रयास रहे पहले पाठ में पढ़ाये गये अक्षरों की भी पुनरावृत्ति हो।
- कविता से संबंधित छोटे–छोटे प्रश्नों के आधार पर बच्चों से बातचीत करें, जैसे जब हाथी आता है तो कैसी आवाज आती है? हाथी की तरह कैसे चलेंगे? हाथी कितने केले खाता है?
- बच्चों से हाथी की ऊँचाई, लम्बाई, अंगों के आकार–प्रकार, खाना–पीना, नहाना, चलना, दौड़ना, उपयोग आदि के बारे में बात करें। श्यामपट पर बच्चों द्वारा बतायी गयी बातों को लिखें और उसे पढ़कर सुनायें तथा अनुमान लगाकर पढ़ने के लिए कहें।
- हाथी की जगह किसी और जानवर का नाम रखकर नई कविता बनाएँ, जैसे– शेर, मोर, चींटी इत्यादि।

समूह–कार्य

- वर्णमाला का चार्ट लटका दें। बोर्ड पर धम्मक, हाथी, आता, जाता, नहाता, केला तथा खाता, ये शब्द बारी–बारी से लिखें। वर्णमाला चार्ट देखकर हर एक शब्द में आये अक्षरों को अलग–अलग कर कॉपी में लिखने को कहें (ये अक्षर होंगे ग, घ, ध, ह, छ, त एवं ज। **बच्चों को खुद खोजनें दें ज़रूरत पड़ने पर उनकी मदद करें)** सभी बच्चे इन अक्षरों को कॉपी पर लिखेंगे। (ध्यान दिलाएँ इनमें से **ह** दो, **त** तीन तथा **क** दो बार आया है। आप जानते हैं कि बच्चे इसके पूर्व थ ल म तथा क को 'चंदा मामा' पाठ में भी सीख चुके हैं।)
- **पाठयपुस्तक में वर्णमाला दी हुई है– बच्चे उसमें से भी अक्षर खोज सकते हैं।**
- बच्चों के समूह बनाकर हर एक अक्षर से शब्द बनाने के बाद शब्दों से संबंधित चित्र बनाने के लिए कहें। उदाहरण के लिए ह से हाथी, हल, कटहल, नहर, गदहा इत्यादि। शब्द की सहायता से अक्षर का सही उच्चारण कराएँ। (**ध्यान रहे** 1. पूर्व के उदाहरण के अनुसार अक्षर इन नामों में शुरू में, बीच में या आखिर में भी हो सकता है। 2. बच्चे कैसा भी चित्र बना सकते हैं, उसे सुधारें नहीं, क्योंकि गतिविधि का उद्देश्य चित्र बनवाना नहीं है बल्कि अक्षरों को वस्तुओं तथा शब्दों से जोड़ना है जिससे वे परिचित हैं। (शिक्षक देखें कि बच्चे किस–किस शब्द से संबंधित वस्तु का चित्र बना रहे हैं, इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित करें।)
- समूह में इन अक्षरों को मुखर स्वर में ज़ोर–ज़ोर से बोलकर पढ़वायें।
- बच्चों को समूह में विभिन्न रंग के कार्ड दें तथा उन रंगों की पहचान करवायें। रंगो से संबंधित वस्तुओं के संबंध में बातचीत करें कि कौन सी वस्तु किस रंग की होती है।
- अभ्यास के प्रश्न को समूह में मिलजुल कर हल करने के लिए कहें।

- अक्षरों के फ्लैश–कार्ड दे कर शब्द बनवाएँ।
- शब्दों एवं अक्षरों के फ्लैश–कार्ड बनाएँ। हर शब्द या अक्षर के दो कार्ड हों– जैसे दो कार्ड खरगोश का या दो कार्ड 'ख' के। इन कार्डों को उलटा रख दें और बच्चों को दो कार्ड उठा कर मिलान करने के लिए कहें। इस खेल को समूह में खेलवाएँ जिससे बच्चे अक्षर और शब्दों को जान सकेंगे और स्मरण शक्ति में वृद्धि होगी।

व्यक्तिगत–कार्य

- सभी बच्चे अपनी स्लेट / कॉपी में ग, थ, ह, छ, घ, त एवं ज अक्षरों को लिखने का प्रयास करेंगे। हर अक्षर को 5 बार लिखेंगे। हर अक्षर से शब्द बनायेंगे, जैसे – धन, धान, कल, हम, अनार इत्यादि।
- इन अक्षरों को पाठ में खोजें तथा उन अक्षरों पर गोला लगवाएँ, जैसे – धन, धान, कल, हम, अनार इत्यादि। शिक्षक बच्चों की गतिविधियों को देखें तथा उनकी मदद करें।
- अभी तक सीखे गये अक्षरों से शुरू होने वाले नाम के बच्चों के नाम का कार्ड बनाएँ और कक्षा में टाँगें। बच्चों की कमीज पर भी इसे लगवाएँ।
- पाठ के अभ्यास–कार्य कराएँ।

पुनरावृत्ति

- बच्चों के बनाये चित्रों की प्रदर्शनी लगवाएँ।
- बच्चों से कविता का लयपूर्वक पाठ कराएँ।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा

बच्चों की संख्या, जो लय में कविता दुहरा सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अक्षरों को पहचानते हैं।							बच्चों की संख्या, जो अपने विचार और अनुभव बता सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो चित्र बनाने में रुचि रखते हैं।
	छ	घ	ग	थ	ह	त	ज		

पाठ - 7 पतंग

उद्देश्य

- कविता को लय से गाने की क्षमता विकसित करना।
- वर्णमाला के अक्षरों (प, त, ग, श, ख, र, फ, ट एवं ढ) की पहचान करना।
- बच्चों में अपने विचार और अनुभव बताने की इच्छा उत्पन्न करना।
- शब्द–भंडार में वृद्धि करना।
- 'इ' एवं 'ई' के उच्चारण विभेद की समझ बनाना।

शिक्षण–निर्देश

- शिक्षक बच्चों से प्रश्न पूछें–हम पतंग कब उड़ाते हैं? पतंग किस–किस रंग की होती है? आदि। बच्चों से पतंग के साथ जुड़े उनके अनुभवों को सुनें तथा श्यामपट पर लिखें और फिर पढ़ें। उन्हें अनुभव सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें।
- कविता को मानक उच्चारण, हाव–भाव एवं लय के साथ पढ़ कर सुनाएँ और बच्चों से सुनें। मानक उच्चारण हेतु बच्चों पर दवाब न डालें।
- **इ** तथा **ई** देखने में लगभग एक–जैसे लगते हैं। इनके बीच में उच्चारण का अंतर स्पष्ट करने के लिए कुछ शब्द लिखकर उच्चारण स्पष्ट करवाएँ। उदाहरण के लिए ईंख, ईंट, इमली इन शब्दों की तरह अन्य शब्दों को बोलने का अभ्यास करायें। ऐसे ही अन्य उदाहरण से दोनों अक्षरों में अंतर स्पष्ट करें।
- कविता में अगर पतंग की जगह कोई और शब्द उपयोग करें, जैसे–गेंद, तो कविता को दुबारा पढ़ें और बच्चों से पढ़वाएँ। बच्चों से भी शब्द चुनवाकर नयी कविता बनवा सकते हैं।

समूह–कार्य

- वर्णमाला का चार्ट लटका दें। बोर्ड पर पाठ से संबंधित शब्दों, जैसे–उड़ी, फर, इसको, काटा, गयी तथा पतंग ये छह शब्द बारी–बारी से लिखें। वर्णमाला चार्ट देखकर हर एक शब्द में अक्षरों को अलग–अलग कर ज़ोर से पढ़ने को कहें और कॉपी में लिखने को कहें (ये अक्षर होंगे प, त, ग, श, ख, र, फ, ट एवं ढ। **बच्चों को खुद खोजने दें)**। सभी बच्चे इन अक्षरों को कॉपी पर लिखेंगे। शिक्षक ध्यान रखें कि बच्चे कुछ अक्षरों को पिछले पाठ में भी सीख चुके हैं।
- हर एक अक्षर का उच्चारण शब्द के माध्यम से बताएँ। समूह में नये अक्षरों का फ्लैश–कार्ड देकर उच्चारण और लिखने (प, त, ग, श, ख, र, फ, ट एवं ढ) का अभ्यास करने के लिए कहें।
- जिन अक्षरों से कोई चित्र बनता हो उसे समूह में बनाने के लिए कहें। शिक्षक श्यामपट पर भी बना सकते हैं।
- समूह में इन अक्षरों को मुखर स्वर में ज़ोर–ज़ोर से बोलकर पढ़वायें।
- जिन अक्षरों से पूर्व के पाठ में परिचय हो चुका है, उन्हें इस पाठ में खोजने तथा उनके उच्चारण का अभ्यास करायें।
- अभ्यास के प्रश्न को समूह में मिलजुल कर हल करने के लिए कहें।
- अभी तक सीखे गए अक्षरों की सूची बनाकर बच्चों को समूह में शब्द बनाने दें। इस कार्य में बच्चे एक दूसरे का सहयोग करेंगे।
- बच्चों से पतंग बनवाएँ। हर एक पतंग पर सीखे गये शब्दों को लिखकर कक्षा में प्रदर्शित करें।

- बच्चों से बारहखड़ी चार्ट में सीखे गये अक्षरों के साथ मात्रा को जोड़कर बताएँ और उसे शब्दों से जोड़ कर पढ़ायें, जैसे –

  क से **कलम,**
  का से **काला,**
  कि से **किताब,**
  की से **कीड़ा,**
  कु से **कुत्ता,**
  कू से **कूची,**
  के से **केला,**
  कै से **कैमरा,**
  को से **कोयल,**
  कौ से **कौआ,**
  कं से **कंकड़,**

  उन्हीं अक्षरों के साथ यह कविता पढ़ाएँ जिन्हें बच्चे अब तक पहचान सके हैं।

- लाल, पीला, नीला, हरा, गुलाबी आदि रंगों से जुड़ी कविता गायें और पतंग का चित्र बनवायें और उसमें रंग भरवायें।

व्यक्तिगत–कार्य

- सभी बच्चे अपनी कॉपी पर **प, त, ग, श, ख, र, फ, ट एवं ढ** अक्षरों से बिना मात्रावाले शब्द बनाकर पाँच बार लिखेंगे, जैसे–रख, फट, पग इत्यादि।
- इन अक्षरों को पाठ में बच्चों से खोजवाएँ।
- बच्चों को पुराना अखबार या किताब दें और सीखे गए अक्षरों को खोजने के लिए कहें तथा उसे घेरा लगाने या रंगने को कहें।
- नये अभ्यास किये गये अक्षरों को बोर्ड पर बारी–बारी से लिखें। बच्चों से एक–एक कर बोर्ड पर से अक्षर अपनी कॉपी पर लिखवाएँ।
- अक्षरों को विभिन्न रंगों से लिखवाएँ।
- बच्चों को अपना नाम, अपने दोस्त का नाम, भाई–बहन का नाम, माता–पिता के नाम को शुरू के अक्षरों को पहचानने को कहें।
- अक्षरों के फ्लैश–कार्ड बच्चों को दें और पढ़ने के लिए कहें।
- पतंग उड़ाने के लिए किन–किन चीजों तथा किस प्रक्रिया की आवश्यकता पड़ती है ? बच्चों को बारी–बारी से बताने कहें।

पुनरावृत्ति

- शिक्षक बारी–बारी से एक–एक अक्षर श्यामपट पर लिखें। बच्चों से उनके उच्चारण कराएँ तथा उनसे जुड़े कोई शब्द बताने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो लय में कविता दुहरा सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो निम्नांकित अक्षर को पहचान सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जिनमें अपने विचार और अनुभव बेझिझक बताने की इच्छा है।	बच्चों की संख्या, जो चित्र बनाने की इच्छा रखते हैं।	बच्चों की संख्या, जो रंग पहचानते तथा उचित उपयोग करते हैं।
	ख र फ ट ढ प त श			

पाठ - 8 मन करता है

उद्देश्य

- कविता को लय के साथ गाने की क्षमता विकसित करना।
- वर्णमाला के कुछ अक्षरों (ध, ष, य, ड़, न, ब एवं स) की पहचान करना।
- तुकान्त शब्दों के प्रति आकर्षण/समझ विकसित करना।
- शब्दों को समझ के साथ पढ़ना।
- नये शब्द और अक्षरों से परिचित होना।
- कल्पनाशक्ति का विकास करना।

शिक्षण–निर्देश

- कविता को मानक उच्चारण, हाव–भाव एवं लय के साथ पढ़कर सुनाएँ। बच्चों को भी लय एवं हाव–भाव के साथ दुहराने को कहें।
- बच्चों से बात करें कि उन्हें क्या–क्या करने का मन करता है। शिक्षक चाहें तो उन्हें श्यामपट पर लिख सकते हैं।
- अक्षरों से शब्द बनाने को कहें। सीखे गये अक्षरों का फ्लैश–कार्ड बनायें और बच्चों के बीच देकर शब्द बनवायें।
- शिक्षक अक्षरों के फ्लैश–कार्ड समूह में उपलब्ध करायें। बच्चों से पढ़वायें, लिखवायें या शब्द बनवायें जिससे अभी तक सीखे गये अक्षरों की पुनरावृत्ति हो सके।

समूह–कार्य

- वर्णमाला का चार्ट टाँग दें। बोर्ड पर पापा, दिखाऊँ, मूँछ, बढ़ाऊँ तथा शोर ये पाँच शब्द बारी–बारी से लिखें। वर्णमाला चार्ट देखकर प्रत्येक पंक्ति के पहले अक्षर को **बच्चों को खुद खोजने दें।** सभी बच्चे इन अक्षरों को कॉपी पर लिखेंगे। शिक्षक ध्यान दें कि इनमें से बहुत सारे अक्षर बच्चे पिछले पाठ में भी सीख चुके हैं।
- पुनः धनुष, चिड़ियाँ एवं आसमान शब्द लिखवायें। वर्णमाला चार्ट में **ष, ड़ एवं अ** को ढुँढवायें एवं घेरा लगवायें।
- हर एक अक्षर के उच्चारण को बतायें। समूह में अक्षर के उच्चारण का अभ्यास करने दें। उच्चारण हमेशा बच्चों की जान–पहचान की चीजों से हो, इसका ध्यान रखें, जैसे– अ से अनार, ब से बस, द से दाँत इत्यादि।
- समूह में इन अक्षरों को मुखर स्वर में ज़ोर–ज़ोर से बोलकर पढ़ें।
- समूह में बच्चे फ्लैश–कार्ड के माध्यम से पहले से सीखे हुए अक्षरों को पहचानें एवं अपने मित्रों को बतायें।
- अभ्यास के प्रश्न को समूह में मिलजुल कर हल करने दें।
- जिन अक्षरों से पूर्व के पाठ में परिचय हो चुका है, उन्हें इस पाठ में खोजने का अवसर दें। उनके उच्चारण का अभ्यास भी करायें।
- बारहखड़ी चार्ट से सीखे गये अक्षरों को मात्रा के साथ जोड़कर शब्द बनवायें एवं पढ़ने का अवसर दें।

व्यक्तिगत–कार्य

- सभी बच्चों से उनकी कॉपी पर **ध, ष, य, ड़, न, ब एवं स** अक्षरों को पाँच–पाँच बार लिखवायें।

- बच्चों को इन अक्षरों को पाठ में खोजने को कहें तथा अक्षरों पर घेरा लगवायें। शिक्षक बच्चों के काम को देखें तथा उनकी मदद करें।
- पाठ में देखेंगे कि बच्चों से कौन–कौन से अक्षर का उच्चारण नहीं हो पा रहा है। ध्यान दें कि बच्चों ने इस पाठ के सभी अक्षरों को सीख लिया है। उच्चारण भी करायें।
- किताब से छोटे–छोटे शब्दों को देखकर लिखने को कहें।
- बच्चों से चित्र बनवायें।
- बच्चे अगर कविता सुनाना चाहें तो उसे सुनें और प्रोत्साहित करें।

पुनरावृत्ति

- शिक्षक बारी–बारी से एक–एक अक्षर बोर्ड पर लिखें तथा बच्चों से उनका उच्चारण पूछें। उस अक्षर से बनने वाली एक वस्तु का नाम बताने को कहें।
- शिक्षक बारी–बारी से पाठ के एक–एक शब्द को लिखें और बच्चों से उन शब्दों के अक्षरों का उच्चारण करवायें।
- बच्चों से कविता–पाठ करायें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा									
बच्चों की संख्या, जो लय में कविता दुहरा सकते हैं।	बच्चे की संख्या, जो निम्न अक्षरों को पहचान सकते हैं।							बच्चों की संख्या, जो अपने विचार और अनुभव बता सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो शब्दों को देखकर पढ़ सकते हैं।
	ध	ष	य	ड़	न	स	ब		

पाठ - 9 आलू का पराठा

उद्देश्य

- ण, ढ, घ, र, भ, ठ एवं ड अक्षर की पहचान करना।
- लिखने की क्षमता विकसित करना।
- नये शब्दों से परिचित कराना।

शिक्षण–निर्देश

- लयबद्ध तरीके से कविता पाठ करें।
- बच्चों से भी दुहराने को कहें।
- पाठ में आये शब्दों को श्यामपट पर लिखें और बच्चों से बोल–बोलकर पढ़वायें।
- समान ध्वनि वाले शब्दों को बोलने के लिए प्रेरित करें।

समूह–कार्य

- वर्णमाला का चार्ट टाँग दें। श्यामपट पर पराठा, भालू, घर तथा ललचाया–ये चार शब्द बारी–बारी से लिखें। वर्णमाला चार्ट देखकर हर एक शब्द में अक्षरों को अलग–अलग कर कॉपी में लिखने को कहें (ये अक्षर होंगे **ठ, ढ, भ, घ, र, ड एवं ण**। बच्चों को खुद खोजने दें) सभी बच्चे इन अक्षरों को कॉपी पर लिखेंगे।
- पुनः श्यामपट पर डमरू, भालू, लोमड़ी, बाण, पवन एवं घर को बारी–बारी से लिखें।
- अब हर एक अक्षर का उच्चारण करके बताएँ। इन अक्षरों से शब्द बनाएँ। समूह में अक्षर के उच्चारण का अभ्यास करने दें।
- जिन अक्षरों से कोई चित्र बनता हो, उसे समूह में बनाने को कहें।
- समूह में इन अक्षरों को मुखर स्वर में ज़ोर–ज़ोर से बोलकर पढ़ें।
- समूह में फ्लैश–कार्ड दें। बच्चों को पहले से सीखे हुए अक्षरों को पहचानने को कहें। इन अक्षरो को बोलकर वे अपने मित्रों को बताएँ।
- अभ्यास के प्रश्न को समूह में मिलजुल कर हल करने कहें।
- जिन अक्षरों से पूर्व के पाठ में परिचय हो चुका है उन्हें इस पाठ में खोजने में मदद करें। उनके उच्चारण का अभ्यास करायें।
- अक्षर–कार्ड से शब्द बनवायें।
- समूह में बच्चों को विभिन्न तरह के जानवरों की तरह चलने को कहें, जैसे–भालू की तरह चलना, मेंढ़क की तरह कूदना, खरगोश की तरह फुदकना, हाथी की तरह चलना, चिड़िया की तरह उड़ना।
- बच्चों से कहानी बनवाएँ – शिक्षक एक वाक्य से शुरू कर सकते हैं।

  शिक्षक – एक जंगल में बहुत जानवर रहते थे।

  एक बच्चा – जंगल का राजा शेर था।

  दूसरा बच्चा – जंगल में भालू रहता था

तीसरा बच्चा – जंगल में खरगोश भी रहता था।

शिक्षक – जंगल के बीच एक कुआँ था।

इस तरह शिक्षक बच्चों से कहानी बनवा सकते हैं जिससे बच्चों में बोलने, सोचने और अपनी बात व्यक्त करने की क्षमता बढ़ेगी। शिक्षक हर वाक्य को श्यामपट पर लिखें तथा पढ़ कर सुनायें, ताकि बच्चे को कहानी के क्रम का ज्ञान हो और कहानी बनाने में मज़ा आये।

व्यक्तिगत–कार्य

- सभी बच्चे अपनी कॉपी पर र, ठ, भ, घ, ढ, ड एवं ण–इन अक्षरों को पाँच–पाँच बार लिखेंगे।
- बच्चे इन अक्षरों को पाठ में खोजें तथा उन पर घेरा लगाये। शिक्षक बच्चों के काम को देखें तथा उनकी मदद करें।
- बच्चे फ्लैश–कार्ड के माध्यम से अक्षरों को अपनी कॉपी पर लिखेंगे।
- शिक्षक ध्यान दें कि बच्चे कौन–कौन से अक्षर का उच्चारण नहीं कर पा रहे हैं। ध्यान देंगे कि बच्चों ने इस पाठ के सभी अक्षरों को सीख लिया है।
- बच्चों को किताब से देखकर ऊपर दिये गये अक्षरों वाले शब्दों को लिखने को कहें।
- हर बच्चे से बारहखड़ी के उनको पढ़वाएँ जिन्हें बच्चे सीख चुके हैं।
- पराठा कैसे बनता है ? बच्चों को बताने कहें।
- बच्चों से कविता पाठ करायें।

पुनरावृत्ति

- शिक्षक बारी–बारी से एक–एक अक्षर–श्यामपट पर लिखें तथा बच्चों से उसका उच्चारण करवायें तथा उसकी सहायता से बननेवाली एक वस्तु का नाम बताने को कहें।
- शिक्षक बारी–बारी से पाठ के एक–एक शब्द को लिखें और बच्चों से उन शब्दों के अक्षरों का उच्चारण करायें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा

बच्चे की संख्या, जो लय में कविता को पढ़ सकते हैं।	बच्चे की संख्या, जो निम्नांकित अक्षरों को पहचान सकते हैं।							बच्चे की संख्या, जो अपने विचार और अनुभव को बता सकते हैं।	बच्चे की संख्या, जो चित्र बना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो शब्दों को देखकर लिख सकते हैं।
	र	घ	ठ	ड	ण	भ	ढ़			

पाठ - 10 पटना का चिड़ियाघर

उद्देश्य

- ड, व, घ एवं ए अक्षर की पहचान करना।
- अपने अनुभव या विचार व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।
- सीखे गये अक्षरों की मदद से शब्द बनाना।
- अनुमान लगाते हुए मात्रावाले शब्दों की पहचान करना।

शिक्षण–निर्देश

- शिक्षक बच्चों को चिड़ियाघर से जुड़ी कोई कहानी सुनायें।
- पाठ्यपुस्तक में दिये गये निर्देश के अनुसार काम करें।
- जानवरों से जुड़ी कविताएँ तथा कहानियाँ सुनायें।
- वर्णमाला का चार्ट टाँग दें। श्यामपट पर वन, पटना, गैंडा तथा चिड़ियाघर–इन शब्दों को बारी–बारी से लिखें। वर्णमाला चार्ट देखकर हर एक शब्द में अक्षरों को अलग–अलग कर कॉपी में लिखने को कहें (ये अक्षर होंगे **ड, व, ग, ए, प, ट, न, च, ड़, घ एवं र**। **बच्चों को खुद खोजने दें**।) सभी बच्चे इन अक्षरों को कॉपी पर लिखेंगे। ध्यान दिलायें इनमें से घ छोड़कर बाकी अक्षर पिछले पाठों में भी बच्चे सीख चुके हैं।
- नये अक्षरों का उच्चारण कर बताएँ। समूह में अक्षरों के उच्चारण का अभ्यास करने दें। 'घ' से बननेवाली वस्तुओं के चित्र बनाने को कहें।
- बच्चों के चिड़ियाघर से जुड़े अनुभवों को सुनें और श्यामपट पर लिखें। इन्हें ज़ोर–ज़ोर से पढ़ें। श्यामपट पर बारी–बारी से बच्चों को बुलाकर जाने–पहचाने शब्दों को पढ़ने कहें। सही पढ़े गये अक्षरों पर घेरा लगायें।
- ध्यान दें कि वर्णमाला में जो अक्षर छूट गये हैं, उन्हें नये शब्दों के माध्यम से बच्चों को बतायें और पढ़वायें।

समूह–कार्य

- समूह में बैठकर बच्चों से पाठ में बने चित्र के आधार पर जानवरों को पहचानने को कहें। देखे गये जानवरों के नाम लिखने को कहें।
- बच्चों के समूह बनाकर पुस्तकालय में खरीदे गये 15–20 पुस्तकें हर समूह में दें। बच्चों को उन पुस्तकों में से जानवरों के चित्र खोजने को कहें। अक्षर–कार्ड के माध्यम से जानवर का नाम लिखवायें।
- समूह में सीखे गये अक्षरों से बच्चों को जानवरों का नाम लिखने की कोशिश करने को कहें। (जानवरों के नाम उन पुस्तकों में लिखे होंगे।)
- बच्चे अपने नाम के अक्षर खोजें और लिखें।
- बारहखड़ी चार्ट से जानवरों के नाम के अक्षर को ढूँढ़ कर लिखने तथा पुनः उसे पढ़ने के लिए कहें।

व्यक्तिगत–कार्य

- सभी बच्चे अपनी कॉपी पर घ, ड, व, ए अक्षर को पाँच–पाँच बार लिखेंगे।
- घ, ड, व, ए से बननेवाले शब्दों को लिखने का प्रयास करेंगे, जैसे– घर, घना, घड़ा इत्यादि।

- अक्षर–कार्ड एवं बारहखड़ी के कार्ड बच्चों को दें और शब्द बनवाएँ।
- अभी तक सीखे गए अक्षर और शब्दों को लिखने का प्रयास बच्चों से कराएँ।
- जानवरों के रूप–रंग, कद–काठी और बोली के बारे में बताने को कहें।

पुनरावृत्ति

- शिक्षक बारी–बारी से जानवरों के नाम बोर्ड पर लिखें। बच्चों से उन शब्दों को अनुमान लगाकर पढ़ने को कहें।
- बच्चों से जानवरों के चित्र बनाने को कहें।
- बच्चों से पूछें– उनको क्या–क्या अच्छा लगा और क्यों ?
- बच्चों को बोर्ड पर जानवरों के नाम लिखने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा							
बच्चों की संख्या, जो निम्नांकित अक्षरों को पहचान सकते हैं।				बच्चों की संख्या, जो शब्दों के उच्चारण अंदाज़ लगाकर कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपने विचार और अनुभव को बता सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो चित्र बना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अंदाज़ लगाकर शब्दों को लिखने का प्रयास करते हैं।
ड	व	घ	ए				

पाठ - 11 चालाक चीकू

उद्देश्य

- अनुभव या विचार व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।
- अंदाज़ लगाकर मात्रावाले शब्दों की पहचान करना।
- सीखे गये अक्षरों की मदद से शब्द बनाने की क्षमता विकसित करना।
- शब्दों को देखकर लिख सकने की क्षमता विकसित करना।
- ा, ि, ी एवं ू की मात्रा का प्रयोग करने की कुशलता विकसित करना।
- भाषा एवं चित्रों के अन्तःसम्बन्धों का अनुमान लगाना।

शिक्षण–निर्देश

- कविता को मानक उच्चारण, हाव–भाव एवं लय के साथ पढ़कर सुनायें बच्चों को भी लय एवं हाव–भाव के साथ दुहराने के लिए प्रेरित करें।
- बारहखड़ी का उपयोग करें और मात्रावाले अक्षरों के उच्चारण करें।

समूह–कार्य

- पाठ से 'ा' की मात्रा से बननेवाले शब्दों को खोजकर लिखने को कहें।
- 'ा' की मात्रा के दो अक्षर वाले दो शब्द चुनें। उदाहरण के लिए–'चार' एवं 'खड़ा'। चार में 'च' के बाद 'ा' की मात्रा है 'च' को बदलकर कोई दूसरा अक्षर लिख दें। बने हुए नये शब्द का उच्चारण करने को कहें, सभी समूहों को ऐसे शब्द तैयार करने को कहें, जैसे– मार, तार, पार इत्यादि।
- चीकू शब्द में दो मात्राएँ हैं ' ी ' एवं ' ू '। समूह में इस शब्द में अक्षरों को बदलें, नये शब्दों का निर्माण करें तथा उन शब्दों का उच्चारण करवाएँ, जैसे– पीकू ,मीकू ,रीकू ,चीनू ,चीलू इत्यादि।
- 'खड़ा' शब्द में से 'ड़' सीखी गयी मात्राओं के प्रयोग से नये शब्द बनवाएँ तथा उनका उच्चारण करने को कहें, जैसे–खड़ी।
- जिन अक्षरों से पूर्व के पाठ में परिचय हो चुका है, उन्हें इस पाठ में खोजने को कहें और उनके उच्चारण का अभ्यास करायें।
- समूह में बच्चों को पूरी कविता लयबद्ध तरीके से पढ़ने का प्रयास करने को कहें। अभ्यास के प्रश्न हल करायें।
- विद्यालय में उपलब्ध पुस्तकालय की किताबों में परिचित अक्षर एवं मात्रा वाले शब्दों को खोजने कहें और उन्हें लिखकर फ्लैश–कार्ड के रूप में प्रदर्शित करायें।

व्यक्तिगत–कार्य

- बच्चे पाठ में से अक्षरों का उच्चारण करें। ध्यान दें कि बच्चों ने इस पाठ के सभी अक्षरों को सीख लिया है।
- पाठ में आये सभी अक्षरों को अलग–अलग लिखें।
- सीखी गयी तीन मात्राओं (ा, ी, ू) से नये–नये शब्द बनायें और कॉपी पर लिखें।

- ा, ी, एवं ू मात्रा के प्रयोग से बनानेवाले शब्दों को पाठ्यपुस्तक में खोजें तथा उन्हें देखकर कॉपी में लिखें।
- सीखी गई मात्रा एवं अक्षरों का फ्लैश कार्ड बनाकर उसकी सहायता से शब्द बनाने के लिए कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से कविता पाठ करायें।
- बारी–बारी से पाठ के एक–एक शब्द को लिखें तथा बच्चों से उन शब्दों के अक्षरों का उच्चारण करायें।
- ा, ी, एवं ू मात्रा के प्रयोग से शब्द बनवाएँ।
- बच्चों से पूछें कि उन्हें कविता में क्या–क्या अच्छा लगा और क्यों ?

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा					
बच्चों की संख्या, जो अपने विचार और अनुभवों को बता सकते है।	बच्चों की संख्या, जो शब्दों को देखकर लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो शब्दों के उच्चारण अंदाज़ लगाकर कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अंदाज़ लगाकर सुने गये शब्दों को लिख लेते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सीखे गये अक्षरों की मदद से शब्द बना सकते हैं।	बच्चे की संख्या, जो ा, ी, ि एवं ू की मात्रा का प्रयोग कर शब्द बना सकते हैं।

पाठ - 12 हरे पेड़

उद्देश्य

- बच्चों में अपने विचार और अनुभव बताने की क्षमता विकसित करना।
- धैर्यपूर्वक बात सुनने की क्षमता विकसित करना।
- अंदाज़ लगाकर मात्रावाले शब्दों की पहचान करना।
- सीखे गये अक्षरों की मदद से नये शब्द बनाना।
- शब्दों को देखकर लिख सकना।
- व, ए तथा ऐ अक्षर एवं ' ◌े ' तथा ' ◌ै ' की मात्रा का प्रयोग करने की कुशलता विकसित करना।

पाठ–परिचय

- बच्चों से पूछें कि क्या आपने कभी पेड़ से बात की है? अगर बच्चे कुछ बताएँ तो उसे श्यामपट पर लिखें। अगर नहीं जवाब दें तो दो बच्चों का जोड़ा बनाकर कक्षा में कुछ को पेड़ और कुछ को सवाल पूछने वाला बच्चा बनाकर सवाल–जवाब करायें।
- शिक्षक पेड़, गाय, नल, कुआँ, झूले, चींटी के बारे में एक–एक करके बात करें। ये आपने कहाँ–कहाँ देखें हैं ? ये दिन भर क्या–क्या करते हैं? आदि सवाल बातचीत के हो सकते हैं।
- **ए** तथा **ऐ** अक्षर के शब्द लिखकर उच्चारण में अंतर स्पष्ट करें। **'ए'** की मात्रा को कुछ शब्द लिख कर समझायें, जैसे– मेल, खेल एवं रेल इत्यादि। ऐ की मात्रा के कुछ शब्द लिखकर समझायें, जैसे – मैल, पैर इत्यादि।
- बारहखड़ी में ऐ, ए वाले अक्षरों को पढ़ने को कहें और उनसे शब्द बनवायें।

समूह–कार्य

- समूह बनाकर पाठ्य–पुस्तक, अन्य पुस्तक एवं अखबार में 'ए' अक्षर वाले शब्दों को ढूँढ़ने के लिए कहें।
- समूह बनाकर पाठ्य–पुस्तक, अन्य पुस्तक एवं अखबार में 'ऐ' अक्षर वाले शब्दों को ढूँढ़ने कहें।
- समूह बनाकर पाठ्य–पुस्तक में **'व'** अक्षर वाले शब्दों को ढूँढ़वायें।
- जिन अक्षरों से पूर्व के पाठ में परिचय हो चुका है उन्हें इस पाठ में खोजवायें तथा उनके उच्चारण का अभ्यास करायें।
- समूह में बच्चों को पूरे पाठ को पढ़ने का प्रयास करने को कहें।
- समूह में अभ्यास के प्रश्न हल करायें।
- बारहखड़ी के अक्षरों के फ्लैश–कार्ड बना कर समूह में दें और उनसे शब्द बनवायें।
- जोड़े बनाकर पाठ का वार्तालाप करायें।

व्यक्तिगत–कार्य

- किसी भी अक्षर में ' ◌े ' एवं ' ◌ै ' की मात्रा लगाकर नए शब्द बनायें तथा पढ़ें।

- पाठ्यपुस्तक में 'व' अक्षर से बने शब्द ढूँढ़कर उन्हें लिखने को कहें।
- सीखी गयी दो नयी मात्राओं (े, ै) से नये–नये शब्द बनवायें और कॉपी पर लिखवायें।

पुनरावृत्ति

- बारी–बारी से पाठ के कुछ शब्द एक–एक कर लिखवायें तथा बच्चों से उन शब्दों के अक्षरों का उच्चारण करवायें।
- ' े ' तथा ' ै ' की मात्रा के प्रयोग से शब्द श्यामपट पर लिखें तथा बच्चों से उच्चारण करायें।
- 'व' अक्षर के प्रयोग से शब्द बोर्ड पर लिखें तथा बच्चों से उच्चारण करायें।
- बच्चों से पाठ की क्रमबद्ध घटनाओं की जानकारी प्राप्त करें।
- बच्चों से ऐसी ही किसी बातचीत को सुनाने को कहें।
- बच्चों से पूछें उनको क्या–क्या अच्छा लगा ? उन्होंने क्या–क्या सीखा ?

<table>
<tr><th colspan="8">कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा</th></tr>
<tr><td rowspan="2">बच्चे की संख्या, जो अपने विचार और अनुभव बताने सकते है।</td><td rowspan="2">बच्चे की संख्या, जो शब्दों को देखकर लिख सकते हैं।</td><td rowspan="2">बच्चे की संख्या, जो अंदाज़ लगाकर शब्दों को लिख सकते हैं।</td><td rowspan="2">बच्चे की संख्या, जो सीखे गये अक्षरों की मदद से नये शब्द बना सकते हैं।</td><td colspan="3">बच्चे की संख्या, जो निम्नांकित अक्षरों को पहचान सकते हैं।</td><td rowspan="2">बच्चे की संख्या, जो े और ै की मात्रा का प्रयोग कर शब्द बना सकते हैं।</td></tr>
<tr><td>व</td><td>ए</td><td>ऐ</td></tr>
<tr><td></td><td></td><td></td><td></td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
</table>

पाठ - 13 लालची कुत्ता

उद्देश्य

- अपने अनुभव और विचार व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।
- दूसरों की बात धैर्यपूर्वक सुनने की क्षमता विकसित करना।
- सीखे गये अक्षरों की मदद से शब्द बनाना।
- ' ु ' एवं ' ू ' की मात्रा का प्रयोग करने की कुशलता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- कुत्ते के बारे में बात करें, जैसे– कुत्ता क्या खाता है? कुत्ता दिन भर क्या करता है? क्या आपको कुत्ते से डर लगता है ? कुत्ते से डर क्यों लगता हैं ? इत्यादि।
- सभी चित्रों को देखने को कहें एवं पूछें कि चित्र में क्या दिखाई दे रहा है?
- चित्रों के आधार पर प्रश्न पूछें, जैसे–कुत्ता को क्या मिला? कुत्ता किस पर भौंका?
- शिक्षक बच्चों से पूछकर घटनाओं के क्रम को काग़ज़ में लिखकर कक्षा में टाँगें, जिससे बच्चे जब चाहें उसे पढ़ सकें।
- ऐसी अन्य चित्रकथाएँ बच्चों को दिखाकर उन्हें कहानी सुनाने को प्रेरित करें।

समूह–कार्य

- समूह बनाकर पाठ्य पुस्तक में ' ु ' एवं ' ू ' मात्रा वाले शब्दों को ढूँढें और उन्हें लिखें तथा उनका उच्चारण करने को कहें।
- बच्चों से कहानी बनवायें।
- समूह में सीखी गई मात्राओं से नए–नए शब्द बनायें और उन्हें कॉपी पर लिखें।
- समूह में पाठ में दिये गये चित्रों की अनुकृति बनायें एवं उनके नाम लिखें।

व्यक्तिगत–कार्य

- चित्र–कथाओं को दिखाकर कहानी सुनें।
- ' ु ' एवं ' ू ' की मात्रा के प्रयोग से शब्द बनवायें।
- बारहखड़ी चार्ट की सहायता से बच्चों ु एवं ू की मात्रा लगाकर शब्द बनाने के लिए कहें।
- बच्चों से कहानी सुनें।
- वर्णमाला को लिखें एवं बच्चों को देखकर लिखने तथा पढ़ने कहें।

पुनरावृत्ति

- बारी–बारी से पाठ के एक–एक चित्र का नाम श्यामपट पर लिखें। बच्चों से उन शब्दों के अक्षरों का उच्चारण करायें।

- ' ु ' तथा ' ू ' की मात्रा के प्रयोग से बने शब्द बोर्ड पर लिखें। बच्चों से उच्चारण करायें।
- बच्चों से कहानी सुनें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा			
बच्चों की संख्या, जिनमें अपने विचार और अनुभव बताने की समझ है।	बच्चों की संख्या, जो चित्रों का अंदाज़ लगाकर शब्दों में लिखने का प्रयास करते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सीखे गये अक्षरों की मदद से शब्द बना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो ' ु ' तथा ' ू ' की मात्रा का प्रयोग कर शब्द बना सकते हैं।

पाठ - 14 दो दोस्त

उद्देश्य

- अपने अनुभव और विचार व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।
- दूसरों की बात धैर्यपूर्वक सुनने की क्षमता विकसित करना।
- चित्रों से अनुमान लगाने की क्षमता विकसित करना।
- चित्र–कथाओं को समझने की क्षमता विकसित करना।
- चित्रों को देख कर उनके नाम लिख सकना।
- 'ो', ' ि' तथा ' ौ' की मात्राओं का प्रयोग करने की कुशलता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से उनके दोस्त के बारे एक–एक करके बात करें। सबके दोस्तों के नाम, वे अपने दोस्तों के साथ क्या–क्या करते हैं, इत्यादि। बच्चों को फ्लैश–कार्ड का उपयोग कर अपने दोस्त का नाम लिखने को कहें।
- हाव–भाव एवं मानक उच्चारण के साथ पाठ को पढ़कर सुनायें।
- **'ो'** की मात्रा वाले शब्दों को श्यामपट पर लिखकर उच्चारण स्पष्ट करें, उदाहरण दो, दोस्त, कोयल इत्यादि।
- **' ि'** की मात्रा वाले शब्दों को श्यामपट पर लिखकर उच्चारण स्पष्ट करें, जैसे–कवि, मुनि, किताब इत्यादि।
- **'ौ'** की मात्रा वाले शब्दों को श्यामपट पर लिखकर उच्चारण स्पष्ट करें, जैसे–और , कौन, कौआ इत्यादि।
- **'ो'** तथा **'ौ'** की मात्रा के उच्चारण शब्दों के माध्यम से करें, जैसे–कोर, कौर, मोर, मौर इत्यादि।
- शिक्षक इस पूरी कहानी को बड़े से चार्ट पेपर पर लिख कर कक्षा में टाँग दें। खुद भी पढ़ें और बच्चों से भी पढ़वायें।

समूह–कार्य

- पाठ्य–पुस्तक में **ए** मात्रा वाले शब्दों को ढूँढ़ें।
- समूह बनाकर पाठ्य–पुस्तक में **ऐ** मात्रा वाले शब्दों को ढूँढ़ें।
- समूह बनाकर सीखी गयी नयी मात्राओं से नये–नये शब्द बनायें और फिर उन्हें कॉपी पर लिखें।
  जैसे – **' ा' – आम, राम**
  ' ि' – किताब, किवाड़
  ' ी' – नीला, पीला
  ' ु' – कुत्ता, गुल्ला
- जिन अक्षरों/मात्राओं का पूर्व के पाठ में परिचय हो चुका है, उन्हें इस पाठ में खोजवायें और उनके उच्चारण का अभ्यास करायें।
- समूह में बच्चे को पूरा पाठ पढ़ने का प्रयास करने को कहें।
- समूह बनाकर अभ्यास के प्रश्न हल करवायें।

व्यक्तिगत–कार्य

- 'ो' 'ि' 'ै' 'े' तथा 'ौ' की मात्रा के प्रयोग से शब्द बनवायें।
- बारहखड़ी को बोल कर पढ़वायें।
- वर्णमाला के अक्षरों को लिखने कहें।
- शिक्षक बच्चों के सीखे हुए अक्षर और मात्राओं को श्यामपट पर लिख दें और फिर शब्द बनाने को कहें।
- बच्चों से कहानी सुनाने को कहें।

पुनरावृत्ति

- शिक्षक बारी–बारी से पाठ के एक–एक शब्द को लिखेंगे और फिर बच्चों से उन शब्दों के अक्षरों के उच्चारण करायेंगे।
- 'ो' 'ि' तथा 'ौ' की मात्रा के प्रयोग से शब्द श्यामपट पर लिखें और बच्चों से उच्चारण करायें।
- कहानी के संबंध में बच्चों से पूछें–किस घटना के बाद क्या हुआ?
- 'ओ' तथा 'औ' के उच्चारण में क्या अंतर है ? इनसे बने शब्दों के माध्यम से उनके उच्चारण के अंतर स्पष्ट करायें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा						
बच्चों की संख्या, जो अपने विचार और अनुभव बताते हैं।	बच्चों की संख्या, जो शब्दों को देखकर लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो शब्दों के उच्चारण के सम्बन्ध में अंदाज़ लगाते हैं।	बच्चों की संख्या जो अंदाज़ लगाकर शब्दों को लिखने का प्रयास करते हैं।	बच्चों की संख्या,जो सीखे गये अक्षरों की मदद से शब्द बना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो इ, ई, ओ एवं औ अक्षर एवं 'े ''ि' तथा 'ै' की मात्राओं का प्रयोग कर शब्द बना सकते हैं।	बच्चे की संख्या, जो घटना को क्रम में बता सकते हैं।

पाठ - 15 शेर और सियार

उद्देश्य

- समझ के साथ पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- अपने अनुभव और विचार व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।
- शब्दों को देख कर लिख सकना।
- दूसरों की बात धैर्यपूर्वक समझते हुए सुनने की क्षमता विकसित करना।
- झ, ड, श, तथा ं का प्रयोग करने की कुशलता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- शेर तथा सियार के बारे में बात करें। उदाहरण के लिए शेर या सियार कैसा दिखता है ? वे कैसे दूसरे जानवरों से अलग हैं ? कहाँ रहते हैं ? क्या–क्या खाते हैं ?
- ' ड ' अक्षर का उच्चारण स्पष्ट करने के लिए ड से बनने वाले कुछ शब्द बोर्ड पर लिखें। उच्चारण करके सुनाएँ। बच्चों से उच्चारण कराएँ, उदाहरणार्थ–डर, डरपोक, डेरा, डमरू, डोरी इत्यादि।
- ' श ' अक्षर का उच्चारण स्पष्ट करने के लिए कुछ शब्द बोर्ड पर लिखें। उच्चारण करके सुनाएँ। बच्चों से उच्चारण कराएँ, जैसे – शाम, शोर, शादी।
- ' झ ' अक्षर का उच्चारण स्पष्ट करने के लिए कुछ शब्द बोर्ड पर लिखें। उच्चारण करके सुनाएँ। बच्चों से उच्चारण करायें, उदाहरण–झूला, झाड़ू, झरना, इत्यादि।
- अनुस्वार का उच्चारण स्पष्ट करने के लिए कुछ शब्द बोर्ड पर लिखें। उच्चारण करके सुनाएँ। बच्चों से उच्चारण करायें, उदाहरण–पंजा, अंग, अंतर, मंतर, जंतर इत्यादि।
- हाव–भाव एवं मानक उच्चारण के साथ पाठ को पढ़कर सुनायें। पाठ में आये शब्दों का फ्लैश–कार्ड बनायें और बच्चों को पढ़ने को दें।
- अभ्यास में दिये गये कार्य करायें।

समूह–कार्य

- समूह बनाकर पाठ में आये ' दो ' अक्षर वाले शब्द चुनने को कहें तथा उसका उच्चारण करने को कहें। शब्द चुनने में शिक्षक मदद करें।
- समूह बनाकर ' झ ' अक्षर की सहायता से बनने वाले शब्द बनाने को कहें तथा उसका उच्चारण करने को कहें। ये शब्द सार्थक या निरर्थक हो सकते हैं। शिक्षक ऐसे शब्दों को सुनें।
- समूह बनाकर पाठ्य–पुस्तक और अखबार में अनुस्वार वाले शब्द खोजने को कहें तथा उसे कॉपी में लिखने को कहें।
- समूह बनाकर अनुस्वार वाले शब्द बनाने तथा उनका उच्चारण करने को कहें।
- समूह में बच्चे पूरे पाठ को पढ़ने का प्रयास करें।
- समूह बनाकर अभ्यास के प्रश्न हल करायें।

व्यक्तिगत–कार्य

- पाठ्य–पुस्तक में से **ड, झ** एवं **अनुस्वार** से बने शब्द ढूँढ़ कर लिखने को कहें।
- पाठ के सभी अक्षरों को अलग–अलग लिखें।
- बारहखड़ी का वाचन करायें और फ्लैश–कार्ड से शब्द बनायें।
- वर्णमाला का वाचन करायें।
- वर्णमाला का वाचन करायें।
- वर्णमाला के क्रम के अनुसार फ्लैश कार्ड सजाने के लिए कहें।
- बच्चों से ऐसी ही किसी अन्य कहानी सुनाने को कहें।

पुनरावृत्ति

- शिक्षक बारी–बारी से पाठ के एक–एक शब्द को लिखें तथा बच्चों से उन शब्दों के अक्षरों के उच्चारण करायें।
- बच्चों से पूछें–किस घटना के बाद क्या हुआ ?
- अक्षरों एवं मात्राओं की पुनरावृत्ति करायें।
- बच्चों से इस कहानी को सुनें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा					
बच्चों की संख्या, जो कहानी बताने में सक्षम हैं।	बच्चों की संख्या, जो शब्दों को देखकर लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो शब्दों के उच्चारण के सम्बन्ध में अंदाज़ लगा सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अंदाज़ लगाकर शब्दों को लिखने का प्रयास करते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सीखे गये अक्षरों की मदद से शब्द बना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो 'ड', 'झ' एवं अनुस्वार का प्रयोग कर शब्द बना सकते हैं।

पाठ - 16 स्वर एवं व्यंजन

उद्देश्य

- बच्चों को सभी व्यंजन वर्णों से परिचित कराना तथा उपयोग करना।
- बच्चों को सभी स्वर वर्णों से परिचित करवाना तथा उपयोग करना।
- बच्चों में मात्राओं का प्रयोग करने की समझ विकसित करना।
- बच्चों को अंदाज़ लगाकर पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- बच्चों में बिना मात्रा वाले शब्दों को लिखने की क्षमता बढ़ाना।

शिक्षण–निर्देश

- प्रत्येक चित्र के साथ जो शब्द दिये हुए हैं, उन्हें साफ़–साफ़ पढ़ें।
- बच्चों को दुहराने को कहें।
- स्वर एवं व्यंजन वर्णों को श्यामपट पर लिखें।
- स्वर एवं व्यंजन का उच्चारण सामूहिक रूप से करवाएँ।
- मात्राओं और अक्षरों के प्रयोग कर शब्दों का निर्माण करवायें।

समूह–कार्य

- अपनी पाठ्यपुस्तक से/पुस्तकालय की पुस्तकों से हर एक स्वर वर्ण के पाँच–पाँच शब्द खोजवाएँ तथा उन्हें कॉपी में लिखने कहें। इन शब्दों के उच्चारण करने को कहें।
- अपनी पाठ्यपुस्तक से/पुस्तकालय की पुस्तकों से हर एक व्यंजन वर्ण के पाँच–पाँच शब्द खोजवाएँ तथा उन्हें कॉपी में लिखवायें। इन शब्दों के उच्चारण करने को कहें।
- अपनी पाठ्यपुस्तक से/पुस्तकालय की पुस्तकों से हरएक मात्रा के पाँच शब्द खोजवायें तथा उसे कॉपी में लिखवायें। इन शब्दों का उच्चारण करने को कहें।
- समूह में पुस्तकालय से चित्रयुक्त पुस्तकों को पढ़ने को कहें इसमें उनकी मदद करें।

व्यक्तिगत–कार्य

- उन अक्षरों एवं मात्राओं से बनने वाले (सार्थक/निरर्थक) कैसे भी शब्द बनाएँ ।
- इन शब्दों को मन–ही–मन पढ़ें।
- इन शब्दों को बोलकर उच्चारण करने को कहें।
- चित्र दिखाकर नाम पूछें।
- बच्चे पाठ्य–पुस्तक से/पुस्तकालय की पुस्तकों में से कोई एक पाठ पढ़ने का प्रयास करें।

पुनरावृत्ति

- हर एक अक्षर से बननेवाले किसी चीज का चित्र अगर संभव हो तो बनाने को कहें।
- श्यामपट में कुछ शब्दों को लिखें तथा उसका उच्चारण करने को कहें।
- उनके द्वारा बनाये गये चित्रों की प्रदर्शनी लगवायें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा			
बच्चों की संख्या, जो सभी व्यंजन वर्णों को पहचानते हैं तथा उनका उपयोग करते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सभी स्वर वर्णों को पहचानते हैं तथा उनका उपयोग करते हैं।	बच्चों की संख्या, जिन्हें मात्राओं के उच्चारण मालूम हैं।	बच्चों की संख्या, जो अंदाज़ लगाकर पढ़ सकते हैं।

फोटो

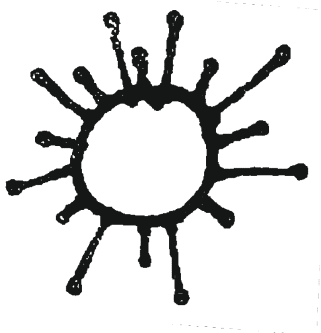

सूरज

चाँद

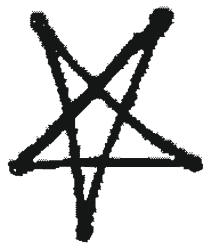

तारा

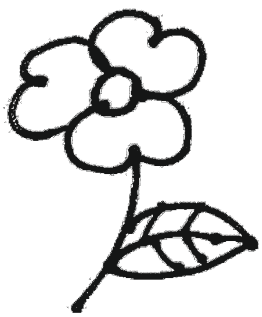

फूल

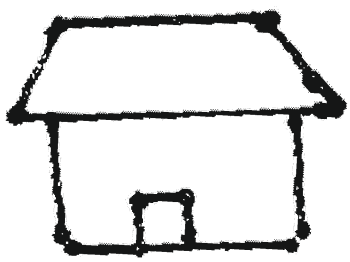

घर

गेंद

पेड़

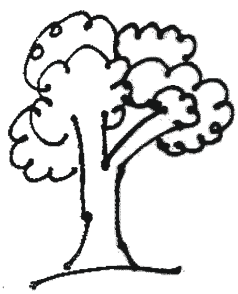

पेड़

पतंग

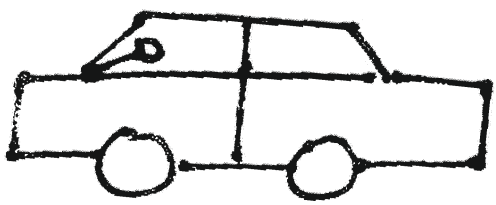

मोटर गाड़ी

बिल्ली

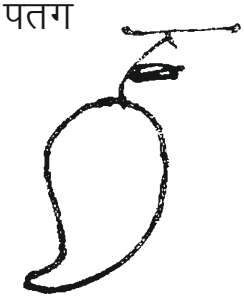

आम

बाल्टी

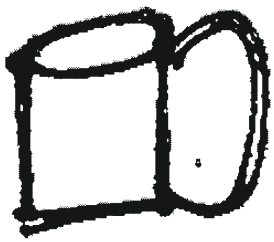

मग

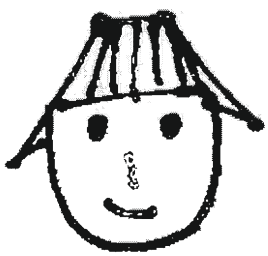

मुखौटा

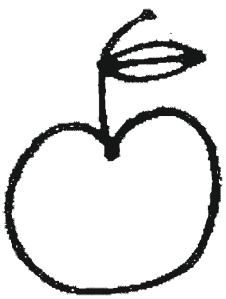

सेब

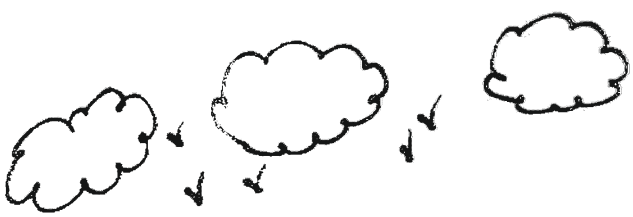

बादल

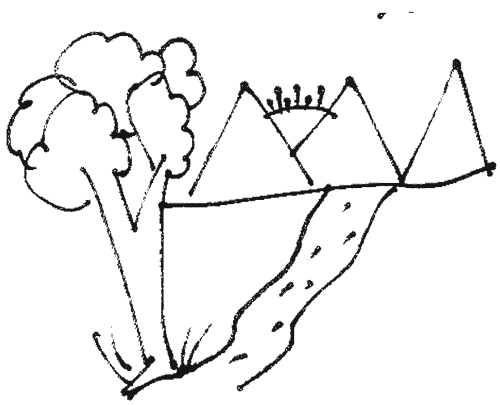

पहाड़

वर्ग-I

हिन्दी

सीखने के बिन्दु	पहला सत्र	दूसरा सत्र	तीसरा सत्र
बातों को सुनता एवं समझता है।			
अपनी बात समझाता है।			
कविता सुनाता है।			
कहानी सुनाता है।			
वाक्यों को समझकर पढ़ता है।			
प्रश्नों के मौखिक उत्तर देता है।			
अक्षरों एवं छोटे शब्दों को पहचानकर पढ़ता है।			
अक्षरों से शब्द बनाता है।			
शब्दों को देखकर लिखता है।			
क से ह तक के अक्षरों को पहचानकर लिखता है।			
तीन-चार शब्दवाले वाक्य को पढ़ता है।			
दो अक्षरों वाले शब्द को सुनकर लिखता है।			